❊ प्राक्कथन :

साहित्य मनुष्य के भावों–विचारों एवम् क्रियाकलापो की अभिव्यक्ति करता है। यह मनुष्य का सर्वोत्तम सृजन है। हम देखें तो कथा साहित्य का प्रारंभ प्राचीनकाल से ही हो गया था। उसमें पद्य साहित्य और गद्य साहित्य ये दोनों विधाएँ है। और उसमें भी गद्य साहित्य का विकास हम भारतेन्दु युग से देख सकते हैं। गद्य साहित्य में भी कई प्रकार कि विधाएँ हैं, जैसे कि – कहानी, उपन्यास, नाटक, एकांकी, रेखाचित्र, संस्मरण, आत्मकथा, जीवनी, निबन्ध आदि। इनमें से कहानी और उपन्यास एक प्रकार से नामांकित और रचना की दृष्टि से श्रेष्ठ गद्य विधा है। आज के जमाने में मनुष्य जिसके द्वारा आनंद की प्राप्ति कर सकता है और एक रचनाकार आनंद की प्राप्ति कराने के साथ–साथ कहानी या उपन्यास में छिपी अपनी बात को, गद्य के सार को लोगों के सामने प्रदर्शित करता है।

कहानी और उपन्यास ये दोनों गद्य विधाएँ आज के आधुनिक युग की देन है। आज के आधुनिक कथा साहित्य में हिन्दी के कई कथाकारों ने अपने गद्य साहित्य में आधुनिक नजरिये को प्रदर्शित किया है। आज के मानव जीवन में भी हम सभी जगहों पर आधुनिकता बोध को देख सकते हैं, महसुस कर सकते हैं। जैसे कि – अकेलापन, संत्रास, ऊब, घुटन, पागलपन आदि। और आधुनिक बोध के नये स्तरों और आयामों को समाज के सामने उद्‌घाटित किया है।

मैंने इसी प्रकार आधुनिकता बोध को प्रदर्शित करने वाले ऐसे कई उपन्यास और कहानी को पढ़ा। इसी बीच मेरी दृष्टि उषा प्रियंवदा के साहित्य की ओर गई। उनके साहित्य से मैं बहुत प्रभावित हुआ। उन्होंने अपने साहित्य में मानव जीवन में निरूपित आधुनिकता को दिखाया है। पग–पग पर भारतीय एवम् विदेशी दोनों प्रकार के जीवन पर प्रकाश डाला है। उनके इन्हीं आधुनिक गद्य साहित्य से प्रभावित होकर मैंने इस शोध प्रबन्ध में उषा प्रियंवदा के गद्य साहित्य में प्रस्तुत आधुनिकता बोध को प्रदर्शित करने का प्रयास किया है।

❊ विषय–चयन :

अपने अध्ययन काल से मुझे विनयन विद्या शाखा में आगे बढ़ने का बड़ा शौक रहा है और उसमें भी कई विषयों में से हिन्दी विषय की ओर मेरा विशेष लगाव रहा है। इस लगाव के कारण मैंने हिन्दी विषय में स्नातक और अनुस्नातक का अभ्यास किया। और फिर अनुस्नातक हिन्दी की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद मन में एक मात्र उत्कट इच्छा थी शोधकार्य करने की। इस इच्छा को सार्थकता में परिवर्तित करने के लिए अनुकूल विषय होना अनिवार्य था। उसके बाद आगे बढ़ने हेतु मैंने एम. फिल्. में शोध के लिए "राजेन्द्र यादव की कहानियों में मनोवैज्ञानिकता" विषय पर लघु शोध प्रबन्ध प्रस्तुत किया और एम. फिल्. की पदवी प्राप्त की। एम. फिल्. के दौरान ऐसे कई साहित्य पढ़े जिसमें मनोवैज्ञानिकता के साथ–साथ आज के आधुनिक जीवन की ओर भी प्रकाश डाला गया था। उसी बीच उषाजी की कुछ किताबे मेरे हाथ लग गई। जिसमें से मैंने 'पचपन खम्भे लाल दीवारें' उपन्यास का अध्ययन किया।

उषाजी के उस उपन्यास का अध्ययन करने के पश्चात् मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि मानो मुझे मनोनुकूल विषय मिल गया हो। 'पचपन खम्भे लाल दीवारें' उपन्यास पढ़ने के पश्चात् उससे प्रेरित होकर मैंने विशेष रुचि से उषाजी के कुछ उपन्यासों और कहानी का अध्ययन किय जिससे लेखिका के प्रति मेरे मन में श्रद्धा का भाव बढ़ता ही गया। इन कृतियों की अपनी एक अलग ही पहचान थी, इनके पात्र सजीव होकर मेरे इर्द–गिर्द के वातावरण में मंडराने लगे, कहीं–कहीं तो पात्रों में अपने ही अन्तर्मन की झलक देखने को मिली। लेखिका ने इन रचनाओं में मनुष्य के अन्तर्गत भावों को मानो गहराई से झाँक कर देखा हो। उषाजी के गद्य साहित्य से प्रभावित होकर मैंने तुरन्त गुरुदेव डॉ. आर. एम. पाण्डेय जी से मुलाकात की। उनके सम्मुख अपने विचारों को रखा और शोधकार्य का विषय तय कर लिया – **"उषा प्रियंवदा के गद्य साहित्य में आधुनिकता : एक अध्ययन।"** उषाजी के साहित्य विषय पर चर्चा करने के बाद उन्होंने मुझे तत्काल ही उषाजी के साहित्य पर काम करने की दिशा एवं अनुमति प्रदान की।

❊ मौलिकता :

आज के जमाने में हम हर जगह पर आधुनिकता को देख सकते हैं। मानव जीवन के चारों और आधुनिकता ही देखने को मिलती है। इसी नजरिये को ध्यान में रखते हुए, उषाजी ने मानव जीवन में व्यापित आधुनिकता को अपने साहित्य में उतारा है। उन्होंने मानव मन में व्याप्त मानसिक यंत्रणा को अपने साहित्य का आधार बनाया है। उन्होंने अपने साहित्य में अकेलापन, पागलपन, अजनबीपन, खोखलापन, ऊब, घुटन, दिखावा–प्रदर्शन, सैक्स, समलैंगिक सम्बन्ध, अलगाव बोध, ईर्ष्या, पारिवारिक सम्बन्धों में टूटन, नर–नारी के सम्बन्धों में आये बदलाव, सम्बन्धों में आया ठंडापन और दूराव आदि आधुनिक जीवन की यंत्रणा को उभारा है।

मैंने इस शोध प्रबन्ध में “उषा प्रियंवदा के गद्य साहित्य में आधुनिकता : एक अध्ययन” विषय को पसंद किया है। उषाजी के साहित्य में व्याप्त आधुनिकता को मैंने अपने मौलिक विचार एवं नजरिये से प्रदर्शित किया है। और उनके गद्य साहित्यगत पात्रों के द्वारा मैंने आज के समय के दौरान होने वाली जीवनाभूति और निरूपित आधुनिकता की चर्चा की है।

❊ सामग्री संकलन :

मैंने विषय–चयन के बाद सामग्री संकलन का कार्य शुरू कर दिया। प्रारंभ में मुझे थोड़ी कठिनता महसूस हुई थी पर स्नेहीजनों का सहयोग और माननीय डॉ. आर. एम. पाण्डेय के निर्देशन ने मेरी कठिनता को आसान कर दिया। मैंने सबसे पहले मेरी अपनी कॉलेज के पुस्तकालय से, जिला पुस्तकालय, नवसारी से, महात्मा गांधी पुस्तकालय, वलसाड से, श्रीमती जे. पी. श्रोफ आर्ट्स कॉलेज पुस्तकालय, वलसाड से, वी. एस. पटेल आर्ट्स एण्ड सायन्स कॉलेज के पुस्तकालय बीलीमोरा से, आर्ट्स एण्ड कॉमर्स कॉलेज के पुस्तकालय, चीखली से, वीर नर्मद दक्षिण गुजरात युनिवर्सिटी के पुस्तकालय, सूरत से, नर्मद लायब्रेरी के पुस्तकालय, सूरत से, गुजरात विद्यापीठ के पुस्तकालय, अमदावाद से, तालुका पुस्तकालय चीखली से, बहुत सी सामग्री

संदर्भ पुस्तक के रूप में और पुस्तक के रूप में प्राप्त की। और इसी के साथ राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, कपूर बुक्स, वडोदरा और वलसाड बुक स्टोर, वलसाड से भी मैंने कुछ पुस्तकों की प्राप्त की। इस तरह मेरी सामग्री संकलन की यात्रा बड़ी कठिन रही, और फिर अंत में वह एक सुखद अनुभूति बन गई।

❊ प्रस्तुतीकरण एवम् शोध–सार :

अध्याय–१

उषा प्रियंवदा का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

आज हिन्दी साहित्यकारों ने हिन्दी की सभी विधाओं में अपनी कलम का जादू दिखाया है। इन साहित्यकारों का लेखन ही हमें उनके लेखन के विशेष अध्ययन की ओर प्रेरित करता है। इन आधुनिक साहित्यकारों में उषा प्रियंवदा एक श्रेष्ठ और उमदा साहित्यकार है। इस प्रथम अध्याय को दो भागो में विभाजित किया है – व्यक्तित्व एवं कृतित्व। प्रथम भाग में मैंने उषा प्रियंवदा के व्यक्तित्व के तमाम पहलुओं को उजागर करने का प्रयास किया है।

उषाजी के व्यक्तित्व एक संघर्षशील नारी का व्यक्तित्व रहा है। उनका जन्म कानपुर के एक परिवार में हुआ था। उषाजी की माँ का नाम प्रियंवदा था, उन्होंने अपनी बेटी का नाम 'उषा' रखा। तब से उषाजी ने अपने नाम के साथ अपनी माताजी का नाम जोड़ लिया और 'उषा प्रियंवदा' कहलाने लगी। उषाजी को अपने ननिहाल (कानपुर) में जीना अच्छा नहीं लगता था। क्योंकि वहाँ पर स्त्री की आकांक्षाओं को कुचला जाता था। और वहाँ पर स्त्री और पुरुष में भेद किया जाता। उनका बचपन बड़ी कठिनाई के साथ बीता है। उषाजी कॉलेज शिक्षा में भी सबसे आगे रही। उनके दादाजी के प्रोत्साहन के कारण वे इलाहाबाद विश्वविद्यालय में पढ़ सकी। वहाँ पर उन्होंने पीएच. डी. की उपाधि तक पढ़ाई की। उसके बाद उन्हें फुलब्राईट स्कोलरशिप मिली और वे आगे पढ़ने के लिए अमेरिका गयी। वहाँ पर उनकी मुलाकात किम विल्सन से हुई। वे हावर्ड

युनिवर्सिटी में प्रोफेसर है। फिर दोनों के मन मिलने से उन दोनों का विवाह हो गया। और अभी उषाजी भी विस्कांसिन विश्वविद्यालय में एक प्रोफेसर के रूप में काम कर रही है। अब वह एक समृद्ध वैवाहिक जीवन बिता रही है। इस प्रकार उनकी मनःशक्ति एवं साहित्य की राह पर आगे बढ़ने की लालसा उन्हें आगे बढ़ी ले गयी। और उन्होंने अपने दम पर अपना व्यक्तित्व निखारा।

इस अध्याय के दूसरे भाग में उषाजी के कृतित्व की ओर प्रकाश डाला गया है। हिन्दी कथासाहित्य में उषा प्रियंवदा अपनी विद्वता और प्रखर प्रतिभा के लिए जानी जाती है। उषाजी ने अपने कॉलेज काल से ही लिखना शुरू कर दिया था। उन्होंने उपन्यास और कहानी की ओर ही विशेष दृष्टि दिखाई है। और साथ ही साथ हिन्दी विधा का अंग्रेजी अनुवाद भी उन्होंने किया है।

इस प्रकार उषा प्रियंवदा हिन्दी साहित्य जगत में एक ऐसा तारा है जो हिन्दी साहित्याकाश को हमेशा के लिए प्रज्वलित करता रहेगा। उन्होंने अपने साहित्य में आधुनिक जीवन की ऊब, छटपटाहट, संत्रास और अकेलेपन की स्थिति को अनुभूति के स्तर पर पहचाना और व्यक्त किया है। यही कारण है कि उनकी रचनाओं में एक ओर आधुनिकता का प्रबल स्वर मिलता है तो दूसरी और उनमें चित्रित प्रसंगों तथा संवेदनाओं के साथ हर वर्ग का पाठक तादात्म्य का अनुभव कर सकता है।

अध्याय–२

उषा प्रियंवदा का उपन्यास साहित्य

द्वितीय अध्याय के प्रारंभ में उपन्यास शब्द के अर्थ और स्वरूप को प्रदर्शित किया गया है। इसके बाद उपन्यास की परिभाषा विविध विद्वानों ने दी है। जिनमें पाश्चात्य विद्वानों में फ्रांसीसी बेकन, जॉर्ज मूर, डी. एच. लारेन्स आदि हैं और भारतीय विद्वानों में मुंशी प्रेमचन्द, बाबू गुलाबराय, डॉ. श्याम सुन्दरदास, आचार्य नन्द दुलारे बाजपेयी आदि है। इसके साथ–साथ उपन्यास साहित्य के विकास को भी कालक्रम के अनुसार प्रस्तुत किया है।

इसके साथ उषा प्रियंवदाजी के पाँचों उपन्यासों का विस्तार से वर्णन किया गया है। उषाजी का सबसे पहला उपन्यास 'पचपन खम्भे लाल दीवारें' है, जो अपने समय में बहुत चर्चित रहा है। इस उपन्यास में उषा प्रियंवदा ने एक ऐसी लड़की (सुषमा) के अन्तर्मन की स्थिति को बताया है। जो अपने परिवार के लिये अपने जीवन की सारी आशा–आकांक्षाओं का गला घोंट देती है। दूसरे उपन्यास 'रूकोगी नहीं राधिका' में उषाजी ने एक साथ पूर्व और पश्चिम की संस्कृति के बीच की खाई को ही नहीं खोला, बल्कि इन संस्कृतियों में दोनों तरफ 'मिसफिट' होनेवाले व्यक्ति की नियति और मोहभंग को इसकी मुख्य नायिका राधिका के माध्यम से स्पष्ट किया है। उनके तीसरे उपन्यास 'शेषयात्रा' में अनु नायिका है। जो विदेश में पति के द्वारा त्याग दिये जाने पर टूटती नहीं लेकिन नारी की परम्परागत सामर्थ्यहीनता को अनुकरणीय रूप में तोड़ती है। और अपने बाकी के शेष जीवन की यात्रा को अपने पैरों पर खड़े होकर शान से जीती है। उनके चौथे उपन्यास 'अन्तर्वशी' में उन तमाम भारतीय परिवारों के जीवन–शैली का विश्लेषण करता है। जो बेहतर अवसरों की तलाश और आशा में प्रवासी हो जाते हैं। वहाँ संघर्ष और मोहभंग का शिकार होते है। वैसे ही नायिका वाना की हालत को हम इस उपन्यास में देख सकते हैं। उनके पाँचवे उपन्यास 'भया कबीर उदास' में नायिका लिली पांड्ये है। जिसके शरीर की पूर्णता–अपूर्णता को लेकर होनेवाली समसयाओं को वैचारिकता से दूर करने का प्रयास उषाजी ने किया है।

अध्याय–३

उषा प्रियंवदा का कहानी साहित्य

तृतीय अध्याय के प्रारंभ में कहानी शब्द के अर्थ, स्वरूप और कहानी परंपरा को स्पष्ट किया है। फिर कहानी की परिभाषा विविध विद्वानों ने दी है। जिनमें पाश्चात्य विद्वानों में एच. जी. वेल्य, एलरी सिजविक, एडगर एलन पो आदि है और भारतीय विद्वानों में डॉ. जगन्नाथ शर्मा, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, जैनेन्द्र कुमार, डॉ. सुरेश सिन्हा आदि हैं। उसके बाद कहानी साहित्य के विकास को प्रदर्शित किया गया है।

इसके बाद उनके सभी कहानी संग्रहों की कहानियों का विस्तृत में वर्णन किया गया है। उनके नौ कहानी संग्रह है। जैसे कि पहला 'फिर बसंत आया' कहानी संग्रह है, इस संग्रह में बारह कहानियाँ हैं। दूसरा कहानी संग्रह 'जिन्दगी और गुलाब के फूल' है, इस संग्रह में भी बारह कहानियों को हम देख सकते है। तीसरा कहानी संग्रह 'एक कोई दूसरा' है, इस संग्रह में सात कहानियाँ हैं। चौथा कहानी संग्रह 'मेरी प्रिय कहानियाँ' हैं, इस संग्रह में पाँच कहानियाँ हैं। पाँचवा कहानी संग्रह 'कितना बड़ा झूठ' है, इस संग्रह में आठ कहानियों को हम देख सकते हैं। छट्ठा कहानी संग्रह 'शून्य तथा अन्य रचनाएँ' है, इस संग्रह में चार कहानियाँ, तीन यात्रा–संस्मरण और श्रोताओं के नाम लिखे चौदह पत्रों को संग्रहित किया गया है। सातवाँ कहानी संग्रह 'मेरी कहानियाँ' है, इस संग्रह में पाँच कहानियाँ हैं। आठवाँ कहानी संग्रह 'सम्पूर्ण कहानियाँ' हैं, इस संग्रह में उपर्युक्त सभी कहानी संग्रहों की कहानियों को संग्रहित किया गया है। नौवाँ कहानी संग्रह 'बनवास' है, इस संग्रह में तेरह कहानियों को समाया गया है। उषाजी ने हिन्दी कहानी साहित्य में अपना विशेष स्थान बनाया है। उनकी ज्यादातर कहानियाँ 'आधुनिकता बोध' को लेकर लिखी गयी है।

अध्याय–४

उषा प्रियंवदा के गद्य साहित्य में आधुनिकता

चतुर्थ अध्याय के प्रारंभ में आधुनिक शब्द के शाब्दिक अर्थ को प्रस्तुत करते हुए आधुनिकता शब्द के विस्तृत अर्थ और स्वरूप को प्रदर्शित किया है। इसके बाद आधुनिकता की परिभाषा विविध विद्वानों ने अपने तरीके से दी है, जिनमें विपिन कुमार अग्रवाल, धनंजय वर्मा, रमेश कुंतल, डॉ. नरेन्द्र मोहन, डॉ. नगेन्द्र, डॉ. देवेश ठाकुर, डॉ. भगवती प्रसाद शुक्ल, राजीव सक्सेना आदि हैं। उसके बाद आधुनिकता बोध के कुछ मंतव्य भी विद्वानों ने दिये हैं। जिनमें

कमलेश्वर, राजेन्द्र यादव, ममता कालिया, स्टीफन स्पेंडर, डॉ. जॉर्ज माम्मन, मैथ्यू आर्नोल्ड आदि है।

उसके पश्चात इस अध्याय में उषा प्रियंवदा के गद्य साहित्य में स्थित आधुनिकता को प्रदर्शित किया गया है। गद्य साहित्य यानी के उपन्यास और कहानी साहित्य में आने वाली आधुनिकता। इसमें से पहले उषाजी के उपन्यासों में आधुनिकता को बताया गया है। उनके पाँच उपन्यास है। पहला उपन्यास 'पचपन खम्भे लाल दीवारें' हैं, जिसमें आर्थिक विवशता, अकेलापन, संत्रास, ऊब, घुटन, खोखलापन आदि आधुनिक पहलुओं को समजाया गया है। दूसरा उपन्यास 'रूकोगी नहीं राधिका' है, जिसमें मनपसंद पुरुष की खोज, अकेलापन, इलेक्ट्रा ग्रंथि आदि आधुनिक पहलुओं पर प्रकाश डाला है। तीसरा उपन्यास 'शेषयात्रा' हैं, जिसमें पति–पत्नी के टूटते सम्बन्ध, पागलपन, अकेलापन आदि आधुनिक पहलु को उभारा है। चौथा उपन्यास 'अन्तर्वंशी' है, जिसमें भारतीय प्रवासी के मोहभंग, समलैंलिक सम्बन्ध, नर–नारी के शारीरिक सम्बन्ध आदि को समजाया है। पाँचवा उपन्यास 'भया कबीर उदास' है, जिसमें दुःख ग्रस्त मानसिक यंत्रणा, स्त्री–पुरुष के शारीरिक सम्बन्ध आदि आधुनिक दृष्टिकोण को प्रदर्शित किया गया है।

उसके बाद उषाजी की कहानियों में आधुनिकता को दिखाया गया है। उनकी कहानी 'दृष्टिकोण', 'प्रसंग' में पारिवारिक सम्बन्धों में आये बदलाव को देखा गया है। 'सम्बन्ध', 'मोहबंध', 'प्रतिध्वनियाँ' कहानी में नर–नारी के सम्बन्धों में आये बदलाव को दिखाया गया है। 'पुनरावृत्ति', 'चाँद चलता रहा', 'टूटे हुए' कहानी में नर–नारी के अनैतिक सम्बन्ध, 'कितना बड़ा झूठ', 'ट्रिप', कहानी में तीसरे व्यक्ति की जीवन में भूमिका, 'वापसी' कहानी में 'अजनबीपन', 'छुट्टी का दिन', 'पूर्ति', 'पचपन खम्भे लाल दीवारें' कहानी में अकेलापन, 'नींद', 'शून्य' कहानी में अलगाव बोध, 'सुरंग' कहानी में खोखलापन, 'स्वीकृति' कहानी में ऊब, 'चहार दीवारी',

'बनवास' कहानी में घुटन, 'सागर पार का संगीत', कहानी में कुंठा, 'जिन्दगी और गुलाब के फूल' कहानी में हीनता ग्रंथि आदि पहलुओं को आधुनिकता बोध के नजरिये से प्रदर्शित किया गया है।

इस अध्याय में उषा प्रियंवदा के संपूर्ण गद्य साहित्य में व्याप्त आधुनिकता को प्रदर्शित किया गया है।

अध्याय–५

उषा प्रियंवदा के गद्य साहित्य का मूल्यांकन

पंचम् अध्याय के अंतर्गत उषा प्रियंवदा के उपन्यास और कहानी साहित्य का तत्त्वों के माध्यम से मूल्यांकन सम्मिलित किया है। सबसे पहले तो इस अध्याय में उपन्यास साहित्य के छः तत्त्व, जैसे कि – कथानक, पात्र और चरित्रचित्रण, कथोपकथन और संवाद, देशकाल और वातावरण, भाषा–शैली और उद्देश्य को स्पष्ट किया गया है। और फिर उन तत्त्वों के आधार पर प्रियंवदाजी के पाँचों उपन्यास का मूल्यांकन किया गया है।

इसके बाद कहानी साहित्य के छः तत्त्व, जैसे कि – कथानक, पात्र और चरित्रचित्रण, संवाद और कथोपकथन, देशकाल और वातावरण, भाषा–शैली और उद्देश्य को समजाया गया है। और उसके बाद उन्हीं तत्त्वों के द्वारा उषाजी की सभी कहानियों का मूल्यांकन किया गया है।

उपसंहार

शोध प्रबन्ध के अंतिम चरण उपसंहार में उषा प्रियंवदा के समग्र व्यक्तित्व एवं कृतित्व का निचोड़ प्रस्तुत करते हुए, उषाजी के उपन्यास साहित्य और कहानी साहित्य की समग्र कथावस्तु को प्रस्तुत किया गया है। इसके पश्चात् उषा प्रियंवदा के समग्र गद्य साहित्य में व्याप्त आधुनिकता को प्रस्तुत करने का मैंने विनम्र प्रयास किया है। और फिर उषाजी के उपन्यास साहित्य और कहानी साहित्य का उनके तत्त्वों के आधार पर मूल्यांकन मैंने बखूबी किया है।

अनुक्रमणिका

प्राक्कथन

प्रथम अध्याय : उषा प्रियंवदा का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

१.१ व्यक्तित्व

१.१.१ जीवन परिचय
१.१.२ जन्म तथा पारिवारिक परिचय
१.१.३ बचपन
१.१.४ शिक्षा
१.१.५ वैवाहिक जीवन
१.१.६ अमेरिका का जीवन
१.१.७ पति का परिवार
१.१.८ संस्मरण
१.१.९ पारिवारिक परिवेश
१.१.१० साहित्य जीवन का प्रारंभ और उत्कर्ष

१.२ उषा प्रियंवदा का रचना संसार (कृतित्व)

१.२.१ उपन्यास
१.२.२ कहानी संग्रह

द्वितीय अध्याय : उषा प्रियंवदा का उपन्यास साहित्य

२.१ उपन्यास का शाब्दिक अर्थ और स्वरूप

२.२ उपन्यास की परिभाषा

२.३ हिन्दी उपन्यास साहित्य का विकास

२.४ उपन्यासों का परिचय

२.४.१ पचपन खम्भे लाल दीवारें
२.४.२ रूकोगी नहीं राधिका
२.४.३ शेष यात्रा
२.४.४ अन्तर्वंशी
२.४.५ भया कबीर उदास

तृतीय अध्याय : उषा प्रियंवदा का कहानी साहित्य

३.१ कहानी : स्वरूप और परंपरा

३.२ कहानी की परिभाषा

३.३ हिन्दी कहानी का विकास

३.४ उषा प्रियंवदा का कहानी संसार

३.४.१ ज़िन्दगी और गुलाब के फूल
३.४.२ जाले
३.४.३ पूर्ति
३.४.४ चाँद चलता रहा
३.४.५ दृष्टिदोष
३.४.६ एक कोई दूसरा
३.४.७ झूठा दर्पण
३.४.८ कोई नहीं
३.४.९ सागर पार का संगीत
३.४.१० पिघलती हुई बर्फ
३.४.११ चाँदनी में बर्फ पर
३.४.१२ टूटे हुए
३.४.१३ सम्बन्ध
३.४.१४ कितना बड़ा झूठ
३.४.१५ ट्रिप
३.४.१६ नींद
३.४.१७ सुरंग
३.४.१८ स्वीकृति
३.४.१९ मछलियाँ
३.४.२० पुनरावृत्ति
३.४.२१ प्रसंग
३.४.२२ शून्य
३.४.२३ आधा शहर
३.४.२४ वापसी
३.४.२५ प्रश्न और उत्तर
३.४.२६ मेनकाः रम्भाः उर्वशीः
३.४.२७ दोस्त
३.४.२८ आश्रिता
३.४.२९ मान और हठ
३.४.३० नष्ट नीड़
३.४.३१ नई कोंपल
३.४.३२ तूफ़ान के बाद
३.४.३३ मुक्ता और शशि
३.४.३४ अकेली राह
३.४.३५ बिखरे तिनके : नया नीड़ः
३.४.३६ पैरम्बुलेटर

३.४.३७ कच्चे धागे
३.४.३८ मोहबन्ध
३.४.३९ पचपन खम्भे लाल दीवारें
३.४.४० चहारदीवारी
३.४.४१ एक और बिदाई
३.४.४२ बनवास

चतुर्थ अध्याय : उषा प्रियंवदा के गद्य साहित्य में आधुनिकता

४.१ आधुनिकता का शाब्दिक अर्थ

४.२ आधुनिकता का विस्तृत अर्थ और स्वरूप

४.३ आधुनिकता की परिभाषा

४.४ आधुनिकता बोध से कुछ तात्पर्य

४.५ आधुनिकता बोध का विश्लेषण

४.६ उषा प्रियंवदा के उपन्यास में आधुनिकता

४.६.१ पचपन खम्भे लाल दीवारें

४.६.१.१ आर्थिक विवशता
४.६.१.२ अकेलापन
४.६.१.३ ऊब
४.६.१.४ घुटन
४.६.१.५ संत्रास
४.६.१.६ कामकाजी नारी की त्रासदी
४.६.१.७ टूटे हुए प्रेम की स्थिति
४.६.१.८ खोखलापन

४.६.२ रूकोगी नहीं राधिका

४.६.२.१ मनपसंद पुरुष की खोज
४.६.२.२ अकेलापन और सम्बन्धों में दूरी
४.६.२.३ इलेक्ट्रा ग्रंथि से ग्रस्त राधिका

४.६.३ शेष यात्रा

४.६.३.१ पति–पत्नी के टूटते सम्बन्ध
४.६.३.२ पागलपन

४.६.३.३ अकेलापन

४.६.३.४ ऊब

४.६.४ अन्तर्वंशी

४.६.४.१ भारतीय प्रवासी के मोहभंग

४.६.४.२ समलैंगिक सम्बन्ध

४.६.४.३ नर–नारी के शारीरिक सम्बन्ध

४.६.५ भया कबीर उदास

४.६.५.१ दुःख ग्रस्त मानसिक यंत्रणा

४.६.५.२ नर–नारी के शारीरिक सम्बन्ध

४.७ उषा प्रियंवदा की कहानियों में आधुनिकता

४.७.१ पारिवारिक सम्बन्धों में आये बदलाव

४.७.१.१ दृष्टिदोष

४.७.१.२ प्रसंग

४.७.२ नर–नारी के सम्बन्धों में आये बदलाव

४.७.२.१ सम्बन्ध

४.७.२.२ मोहबंध

४.७.२.३ प्रतिध्वनियाँ

४.७.३ नर–नारी के अनैतिक सम्बन्ध

४.७.३.१ पुनरावृत्ति

४.७.३.२ चाँद चलता रहा

४.७.३.३ टूटे हुए

४.७.४ सम्बन्धों में आया ठंडापन

४.७.४.१ चाँदनी में बर्फ पर

४.७.५ तीसरे व्यक्ति का जीवन में आगमन

४.७.५.१ कितना बड़ा झूठ

४.७.५.२ ट्रिप

४.७.६ अजनबीपन

४.७.६.१ वापसी

४.७.७ अकेलापन

४.७.७.१ छुट्टी का दिन

४.७.७.२ पचपन खम्भे लाल दीवारें

४.७.७.३ पूर्ति

४.७.८ ऊब

४.७.८.१ स्वीकृति

४.७.९ घुटन

४.७.९.१ चहारदीवारी

४.७.९.२ बनवास

४.७.१० नर–नारी के सम्बन्धों में आये बदलाव

४.७.१०.१ नींद

४.७.१०.२ शून्य

४.७.११ कुंठा

४.७.११.१ सागर पार का संगीत

४.७.१२ हीनता ग्रंथि

४.७.१२.१ ज़िन्दगी और गुलाब के फूल

४.७.१३ खोखलापन

४.७.१३.१ सुरंग

४.७.१४ ईर्ष्या

४.७.१४.१ मछलियाँ

४.७.१५ दायित्व बोध

४.७.१५.१ एक कोई दूसरा

४.७.१६ अपराध बोध

४.७.१६.१ पिघलती हुई बर्फ

४.७.१७ कामकाजी नारी के रूप में आधुनिकता बोध

४.७.१७.१ जाले

पंचम् अध्याय : उषा प्रियंवदा के गद्य साहित्य का मूल्यांकन

५.१ उपन्यास साहित्य के तत्त्व

५.२ उपन्यास का मूल्यांकन

५.३ कहानी साहित्य के तत्त्व

५.४ कहानी का मूल्यांकन

– उपसंहार

– परिशिष्ट

(१) उषा प्रियंवदा की पुस्तक सूची

(२) संदर्भ ग्रंथ सूची

(३) कोश

(४) पत्र–पत्रिकाएँ

: धन्यवाद ज्ञापन :

सर्व प्रथम मैं उस परम पिता परमेश्वर के श्रीचरणों में अपने शब्द रूपी श्रद्धा–सुमन अर्पण करता हूँ, जिनकी असीम कृपा एवं शुभाशीष से आज मेरा यह कार्य सम्पन्न हो पाया है।

तत्पश्चात् परम श्रद्धेय गुरुवर डॉ. आर. एम. पाण्डेय, प्राचार्य सरकारी विनयन और वाणिज्य कॉलेज, भीलाड, जिला : वलसाड, का आभार किन शब्दो में व्यक्त करूँ कि जिनके कुशल एवं आत्मीय निर्देशन में यह शोध प्रबंध तैयार किया गया है। अपने व्यस्त जीवन में से भी समय निकालकर विषय–चयन से लेकर इसकी संपूर्णता तक जिस सरलता, सहृदयता और आत्मीयता का परिचय दिया है, उसके लिये मैं सदा उनका ऋणी रहूँगा। उनके प्रति मैं अपनी हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

श्री गुलाबभाई एम. पटेल साहब, हिन्दी प्राध्यापक, वी. एस. पटेल कॉलेज, बीलीमोरा का भी मैं अंतःकरण पूर्वक कृतज्ञता ज्ञापन करता हूँ, जिनके योग्य परामर्श से मेरे इस कार्य में बहुत सी सरलता हुई है।

मैं उन लेखकों, साहित्यकारों, विद्वानों का भी बहुत आभारी हूँ, जिनकी आलोचनात्मक पुस्तकों का मैंने उपयोग किया है।

मैं मेरे पिताजी के प्रति भी कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। क्योंकि इस शोध कार्य में उनका उचित मार्गदर्शन एवं सहायता न मिलती तो शायद मैं यह शोध–प्रबन्ध संपन्न न कर पाता। और मित्र मेहुलभाई तथा निरीक्षाबहन के प्रति भी अपना हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ, जिसने मुझे हमेशा आगे लिखने के लिए प्रेरित किया तथा लेखन की पूर्णता में अपना योगदान दिया।

अंत में मैं वीर नर्मद दक्षिण गुजरात युनिवर्सिटी, पुस्तकालय, सूरत; सरकारी विनयन और वाणिज्य कॉलेज, पुस्तकालय, भीलाड; श्री वी. एस. पटेल कॉलेज ऑफ आर्ट्स एण्ड सायन्स, पुस्तकालय, बीलीमोरा; श्री एम. आर. देसाई आर्ट्स एण्ड कॉमर्स कॉलेज, पुस्तकालय, चीखली;

श्रीमती जे. पी. श्रोफ आर्ट्स कॉलेज, पुस्तकालय, वलसाड; नर्मद सेन्ट्रल पुस्तकालय, सूरत; गुजरात विद्यापीठ, पुस्तकालय, अमदावाद के ग्रंथपालों का भी आभारी हूँ, जिन्होंने मुझे इस शोध– कार्य में उपयोगी पुस्तकें देने में कोई कसर नहीं की है।

अंत में मैं उन सभी गुरुजनों, सह–कार्यकर मित्रों, स्नेहीजनों, सहृदयी शुभचिन्तको और सभी आत्मीय परिवारजनों के प्रति भी कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ, जिन्होंने प्रत्यक्ष–परोक्ष रूप में मुझे सहायता प्रदान की है।

परिशिष्ट

(१) उषा प्रियंवदा की पुस्तक सूची :

❖ उपन्यास साहित्य :

१. पचपन खम्भे लाल दीवारें – उषा प्रियंवदा – राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., १–बी, नेताजी सुभाष मार्ग, नयी दिल्ली–११०००२, पहला संस्करण, १९६२ (पहली आवृत्ति–२०१०)

२. रूकोगी नहीं राधिका – उषा प्रियंवदा – राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., १–बी, नेताजी सुभाष मार्ग, नयी दिल्ली–११०००२, पहला संस्करण, १९६८ (पहली आवृत्ति–२००४)

३. शेष यात्रा – उषा प्रियंवदा – राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., ८–नेताजी सुभाष मार्ग, नयी दिल्ली–११०००२, प्रथम संस्करण, १९८४

४. अन्तर्वंशी – उषा प्रियंवदा – वाणी प्रकाशन, २१–ए, दरियागंज, नयी दिल्ली–११०००२, प्रथम संस्करण, २०००

५. भया कबीर उदास – उषा प्रियंवदा – राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., १–बी, नेताजी सुभाष मार्ग, नयी दिल्ली–११०००२, प्रथम संस्करण, २००७

❖ कहानी साहित्य :

१. ज़िन्दगी और गुलाब के फूल – उषा प्रियंवदा – भारतीय ज्ञानपीठ, बी/४५–४७ कॅनॉट प्लेस, नयी दिल्ली–११०००१, षष्ठ संस्करण, १९७८ जनवरी

२. कितना बड़ा झूठ – उषा प्रियंवदा – राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., ८–नेताजी सुभाष मार्ग, नयी दिल्ली–११०००२, प्रथम संस्करण, १९७२

३. एक कोई दूसरा – उषा प्रियंवदा – राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., १–बी, नेताजी सुभाष मार्ग, नयी दिल्ली–११०००२, प्रथम संस्करण, २०००

४. शून्य तथा अन्य रचनाएँ – उषा प्रियंवदा – राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., १–बी, नेताजी सुभाष मार्ग, नयी दिल्ली–११०००२, प्रथम संस्करण, १९९६

५. मेरी कहानियाँ – वाणी प्रकाशन, २१–ए, दरियागंज, नयी दिल्ली–११०००२, प्रथम संस्करण, २०००

६. सम्पूर्ण कहानियाँ – उषा प्रियंवदा – राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., ८–नेताजी सुभाष मार्ग, नयी दिल्ली–११०००२, प्रथम संस्करण, २००६

७. बनवास – उषा प्रियंवदा – पेंगुइन बुक्स इंडिया प्रा. लि., ११ कम्युनिटी सेन्टर, पंचशील पार्क, नई दिल्ली–११००१७, प्रथम संस्करण, २००९

८. मेरी प्रिय कहानियाँ (उद्धृत) – उषा प्रियंवदा – राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, संस्करण–१९७४

(२) संदर्भ ग्रंथ सूची :

१. अमृतलाल नागर के उपन्यासों का समाजशास्त्र अध्ययन – डॉ. नागेश राम त्रिपाठी – वैशाली प्रकाशन, बख्शीपुर, गोरखपुर, प्रथम संस्करण, १९९३

२. अमृतलाल नागर : व्यक्तित्व, कृतित्व एवं सिद्धान्त – डॉ. सुरेश बत्रा – पंचशील प्रकाशन, फिल्म कोलोनी, जयपुर–३०२००३, संस्करण, १९८४

३. आधुनिक कहानियाँ – संपा. डॉ. भगवत स्वरूप मिश्र (उद्धृत)

४. आधुनिक बोध और आधुनिकीकरण – डॉ. रमेश कुन्तल मेघ – अक्षर प्रकाशन, २/३६, अंसारी रोड़, दरियागंज, दिल्ली–६, प्रथम संस्करण, १९६९

५. आधुनिक बोध और श्री–कांत वर्मा – डॉ. ओम प्रकाश – रचना प्रकाशन, ५७, नाटाणी भवन, मिश्रराजाजी का रास्ता, चाँद पोल बाजार, जयपुर–३०२००१, प्रथम संस्करण, २०१०

६. आधुनिक लेखिकाओं के नगरीय–परिवेश के उपन्यास – डॉ. पारूकांत देसाई – चिन्तन प्रकाशन, नौबस्ता, कानपुर–२०८०२१, प्रथम संस्करण, १९९४ जून

७. आधुनिक हिन्दी उपन्यास : उद्‌भव और विकास – डॉ. बेचन – सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, १९७१

८. आधुनिक हिन्दी उपन्यास और अजनबीपन – डॉ. विद्याशंकर राय – सरस्वती प्रकाशन मंदिर, 69, नया बैरहना इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, १९८१

९. आधुनिक हिन्दी काव्य की प्रवृत्तियाँ – डॉ. ओमप्रकाश शर्मा – बोहरा प्रकाशन, चौड़ा रास्ता, जयपुर–३०२००३, प्रथम संस्करण, १९८९

१०. आधुनिक हिन्दी नाट्‌यकारों के नाट्‌य सिद्धांत – डॉ. निर्मला हेमन्त – अक्षर प्रकाशन प्रा. लि., २/३६, अनसारी रोड, दरियागंज, दिल्ली–६, प्रथम संस्करण, १९७३

११. आधुनिकता और मोहन राकेश – डॉ. उर्मिला मिश्र – विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी

१२. आधुनिकता और हिन्दी उपन्यास (१९३४–३६ से १९७९ तक) – इन्द्रनाथ मदान – राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली–११०००२, प्रथम संस्करण, १९८१

१३. आधुनिकता के पहलू – विपिन कुमार अग्रवाल – लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, १९७२

१४. आधुनिकता के संदर्भ में हिन्दी कहानी – डॉ. नरेन्द्र मोहन – जयश्री प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण–१९८२

१५. आठवें दशक की लेखिकाओं के उपन्यासों में व्यक्त स्त्री चरित्र (१९७० से १९८० तक) डॉ. सविता चोखोबा किर्ते, विनय प्रकाशन, ३–ए–१२८, हंसपुरम्, कानपुर–२१, प्रथम संस्करण, २००७

१६. आस्वाद के धरातल – धनंजय वर्मा – विद्या प्रकाशन, दरियागंज, दिल्ली–६, प्रथम संस्करण, १९७९

१७. आँचलिकता से आधुनिकता बोध – डॉ. भगीरथ प्रसाद शुक्ल (उद्धृत)

१८. इलाचन्द्र जोशी के उपन्यासों का मनोवैज्ञानिक अनुशीलन – श्री कान्ती शुक्ला – अलका प्रकाशन, ३४/६, एच. ए. एल. कालोनी, रामादेवी कानपुर–२०८००७, प्रथम संस्करण, २००७

१९. उपन्यासकार जगदीशचन्द्र संवेदना और शिल्प – डॉ. कैलाशनाथ पाण्डेय – जयभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, १९९२

२०. उपन्यासकार धर्मवीर भारती – डॉ. दिलीप मेहरा – क्लासिकल पब्लिशिंग कम्पनी, २८, शॉपिंग सैंटर, कर्मपुरा, नयी दिल्ली–११००१५, प्रथम संस्करण, २००९

२१. उषा प्रियंवदा के कथा साहित्य में व्यक्त नारी–चेतना – शारदा बी. पटेल – गूजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद (गुजरात), संस्करण, २००८

२२. कथाकार उषा प्रियंवदा – डॉ. सुभाष पवार – विद्या प्रकाशन, सी–४४९, गुजैनी, कानपुर–२२, प्रथम संस्करण, २०१०

२३. कथाकार राहुल सांकृत्यायन – डॉ. रवेलचन्द आनन्द – शारदा प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली–११००३०, प्रथम संस्करण, १९७३

२४. कथा निकष – डॉ. हरिचरण शर्मा – पंचशील प्रकाशन, फिल्म कॉलोनी, जयपुर–३०२००३, संस्करण, १९८३

२५. कथा सप्तक – डॉ. रामदरश मिश्र – वाणी प्रकाशन, ६१–एफ, कमलानगर, दिल्ली–११००३०, प्रथम संस्करण, १९७३

२६. कथा समय में तीन हमसफर – निर्मला जैन – राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., १–बी, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली–११०००२, प्रथम संस्करण, २०११

२७. कमलेश्वर का कहानी साहित्य और सामाजिक यथार्थ – डॉ. धीरजभाई वणकर – ज्ञान प्रकाशन, १२८/९०, 'जी' ब्लाक किदवई नगर, कानपुर–२०८०११, प्रथम संस्करण, २०१०

२८. कहानी और कहानीकार – मोहनलाल जिज्ञासु – आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली–६, संस्करण, १९६३ (उद्धृत)

२९. कहानी का रचना विधान – डॉ. जगन्नाथ शर्मा – हिन्दी प्रचारक संस्थान, वाराणसी, संस्करण, १९५६

३०. कहानीकार प्रेमचन्द – डॉ. कुमारी नूरजहाँ – हिन्दी साहित्य भंडार, ५५, चौपटियाँ रोड, लखनऊ–3, प्रथम संस्करण, १९७५ जनवरी

३१. कहानी : स्वरूप और संवेदना – राजेन्द्र यादव – नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नयी दिल्ली, संस्करण, १९६८

३२. काव्य के रूप – डॉ. बाबू गुलाबराय – आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली, चतुर्थ संस्करण, १९५८

३३. काव्य शास्त्र – भगीरथ मिश्र – विश्व विद्यालय प्रकाशन, गोरखपुर – प्रथम संस्करण, १९५७

३४. कृष्णा अग्निहोत्री के उपन्यासों में नारी – डॉ. बालाजी श्रीपती भुरे – शैलजा प्रकाशन, ५७–पी, कुंज विहार–II, यशोदा नगर, कानपुर–II, संस्करण, २०११ (फरवरी)

३५. जगदीशचन्द्र का उपन्यास साहित्य : एक सामाजिक अनुशीलन – डॉ. सारस्वत परमार शील प्रकाशन, आनन्द (गुजरात), प्रथम संस्करण, २००६

३६. दमघोटु जीवन केन्द्रित, कालजयी हिन्दी कहानियाँ – प्रो. भरत केव बावलिया, शांति प्रकाशन, दिल्ली।

३७. नई कहानी में आधुनिकता बोध – डॉ. साधना शाह – पुस्तक संस्थान, १०९/५०, नेहरुनगर, कानपुर, प्रथम संस्करण, १९७८

३८. नई कहानी में वैयक्तिक चेतना – डॉ. कु. प्रेमपाल – याचना प्रेस, १३, एम. एम. रोड, नई दिल्ली

३९. नया ज्ञानोदय : स्मृति और संसार के द्वैत – उषा प्रियंवदा, रान सेठ (उद्धृत)

४०. नयी समीक्षा : नये संदर्भ – डॉ. नगेन्द्र – नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली, संस्करण–१९७४

४१. प्रेमचन्द जल्प सम्मुच्चय – हंस प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण, १९७९ (उद्धृत)

४२. प्रेमचन्द साहित्य का उद्देश्य – मुंशी प्रेमचन्द – हंस प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, १९५४

४३. प्रेमचन्दोत्तर उपन्यासों की शिल्पविधि – डॉ. सत्यपाल चुघ – इकाई प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, १९६८

४४. भारतीय श्रेष्ठ कहानियाँ – सन्हैयालाल ओझा मार्कण्डेय – लोकभारती प्रकाशन, पहली मंजिल, दरबारी बिल्डिंग, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद–२११००१, प्रथम संस्करण, २०१०

४५. ममता कालिया : व्यक्तित्व एवं कृतित्व – डॉ. फैमिदा बिजापुरे – विनय प्रकाशन, हंसपुर, कानपुर–२१, प्रथम संस्करण, २००४

४६. महिला रचनाकारों की कहानियों में जीवन–मूल्य – डॉ. भारती सेळके – विद्या प्रकाशन, सी–४४९, गुजैनी, कानपुर–२२, प्रथम संस्करण, २००८

४७. मालती जोशी के कथा साहित्य में नारी चेतना – मनसुख जी. गोहेल – गूजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद, दिसंबर–२०१०

४८. मूल्य और हिन्दी उपन्यास – डॉ. हेमराज कौशिक – निर्मल पब्लिकेशन्स, शिव मंदिर, शाहदरा, दिल्ली–९४, प्रथम संस्करण, २०००

४९. मृदुला गर्ग के कथा साहित्य का मूल्यांकन – डॉ. (श्रीमती) राजु बागलकोट – अमन प्रकाशन, १०४ ए/११८, रामबाग, कानपुर, प्रथम संस्करण, २००६

५०. मोहन राकेश की कहानियों में आधुनिकता – प्रा. एम. एम. मुजावर – अलका प्रकाशन, १२८/१०६, 'जी' ब्लाक किदवई नगर, कानपुर–२, संस्करण, १९९५

५१. श्री मोहन राकेश की कहानियों में आधुनिकता बोध – तेजस एन. बारोट – वीर नर्मद दक्षिण गुजरात विश्व विद्यालय, सूरत, जूलाई २००६

५२. राजेन्द्र अवस्थी का कथा साहित्य – डॉ. भाऊ साहेब मा. परदेशी – साहित्य निलय प्रकाशन, ४९, बौद्धनगर नौबस्ता, कानपुर–२०८०२१, प्रथम संस्करण, २०००

५३. समकालीन हिन्दी उपन्यास : समय और संवेदन – डॉ. वी. के. अब्दुल जलील, डॉ. पी. रवी – वाणी प्रकाशन, २१–ए, दरियागंज, नयी दिल्ली–११०००२, प्रथम संस्करण, २००६

५४. समकालीन हिन्दी कहानियाँ – नरेन्द्र मोहन – भारतीय प्रकाशन संस्थान, २४/४८५५, अंसारी रोड, दरियागंज, नयी दिल्ली–११०००२, प्रथम संस्करण, १९९४

५५. साठोत्तरी महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में पात्रों का परिवर्तित मूल्य बोध – डॉ. सीता मिश्र – अन्नपूर्णा प्रकाशन, १२७/११००, डब्ल्यु वन, साकेत नगर, कानपुर–२०८०१४, प्रथम संस्करण, २०१०

५६. साठोत्तरी हिन्दी कहानियों में पुरुष चरित्र – डॉ. दीपा हावगीराज मैलारे – विकास प्रकाशन, ३११ सी, विश्वबैंक बर्रा, कानपुर–२०८०२७.

५७. साठोत्तरी हिंदी महिला कथा–लेखन में आधुनिकता बोध – डॉ. सौ. मेहर दत्ता पाथरीकर शैलजा प्रकाशन, ५७, पी. कुंज विहार II, यषोदानगर, कानपुर–२०८०११, प्रथम संस्करण, २००७

५८. साठोत्तरी हिन्दी लेखिकाओं की कहानियों में नारी – डॉ. सौ. मंगल कप्पीकेरे – विकास प्रकाशन, ३११ सी, विश्व बैंक, बर्रा, कानपुर–२०८०२७, प्रथम संस्करण, २००२

५९. साहित्य की विविध विधाएँ – डॉ. राम प्रकाश – सन्मार्ग प्रकाशन, १६ यू. बी. बेंग्लो रोड, जवाहरनगर, दिल्ली–११०००७, प्रथम संस्करण, १९८६

६०. साहित्य के मूल्य – डॉ. देवेश ठाकुर – मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ, संस्करण, १९८३

६१. साहित्य विवेचन – क्षेमचन्द्र 'सुमन' – योगेन्द्रकुमार मल्लिक – आत्माराम एण्ड संस, काश्मीरी गेट, दिल्ली–६, चतुर्थ संस्करण, १९६८

६२. साहित्यालोचन – डॉ. श्यामसुन्दर दास – इण्डियन प्रेम पब्लिकेसंस प्रा. लि., प्रयाग, तेरहवाँ संस्करण, १९५९

६३. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास और आधुनिकता बोध – डॉ. जोर्ज माम्मन – जवाहर पुस्तकालय, सदर बाजार, मथुरा–२८१००१ (उ. प्र.), संस्करण, २००६

६४. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी का विकास – डॉ. सूबेदार राय – अनुभव प्रकाशन, १०५/७२७, श्रीनगर, कानपुर

६५. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी में लक्षित अलगाव की अवधारणा – डॉ. बिन्दू दूबे – कला प्रकाशन, बी–३५/३३, ए–१, न्यू साकेत कालोनी, बी. एच. यू. वाराणसी–२२१००५, प्रथम संस्करण, २०००

६६. हिन्दी उपन्यास : उद्भव और विकास – डॉ. प्रताप नारायण टंडन – हिन्दी साहित्य भण्डार, लखनऊ, संस्करण १९६०

६७. हिन्दी उपन्यास एवम् कहानी साहित्य – विनोद कुमार नागर – गरिमा प्रकाशन, मुरादाबाद, संस्करण, १९९२

६८. हिन्दी उपन्यास कला : एक मूल्यांकन – डॉ. रामलखन शुक्ल – सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण, १९७२

६९. हिन्दी उपन्यास की शिल्पविधि का विकास – डॉ. (श्रीमती) ओम शुक्ल – अनुसंधान प्रकाशन, कानपुर, संस्करण, १९६४

७०. हिन्दी उपन्यास के पद–चिह्न – डॉ. मनमोहन सहगल – सूर्य प्रकाशन, नई सड़क, दिल्ली–११०००६, संस्करण, १९७३

७१. हिन्दी उपन्यास : प्रेम और जीवन – डॉ. शान्ति भारद्वाज – सुशील प्रकाशन, पुरानी मण्डी, अजमेर, प्रथम संस्करण, १९६९

७२. हिन्दी उपन्यास : प्रेमचन्दोत्तर काल – डॉ. रामशोभित प्रसाद सिंह – ऋषभचरण जैन एवं संतति, दिल्ली, संस्करण, १९८१

७३. हिन्दी उपन्यास : समकालीन विमर्श – डॉ. सत्यदेव त्रिपाठी – अमन प्रकाशन, १०४ ए/११८, रामबाग, कानपुर–२०८०१२, प्रथम संस्करण, २०००

७४. हिन्दी कहानी उद्भव और विकास – डॉ. सुरेश सिन्हा, अशोक प्रकाशन, नई सडक, दिल्ली–६, संस्करण, १९६५ (उद्धृत)

७५. हिन्दी कहानी एक अंतरंग परिचय – उपेन्द्रनाथ अश्क – नीलाभ प्रकाशन, ५, खुसरोबाग रोड, इलाहाबाद, संस्करण, १९६७

७६. हिन्दी कहानी : दो दशक की यात्रा – रामदरश मिश्र और डॉ. नरेन्द्र मोहन – नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली (उद्धृत)

७७. हिन्दी कहानी में प्रकृति चित्रण – डॉ. नरनारायण तिवारी – अमर प्रकाशन, सदर बाजार, मथुरा–२८१००१, प्रथम संस्करण, २००५

७८. हिन्दी कहानी शिल्पविधि का विकास – डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल – साहित्य भवन प्रा. लि. इलाहाबाद (उद्धृत)

७९. हिन्दी कहानी संग्रह – भीष्म साहनी – साहित्य अकादमी, रवीन्द्र भवन, ३५, फीरोजशाह मार्ग, नयी दिल्ली–११०००२, प्रथम संस्करण, १९८८

८०. हिन्दी के सामाजिक उपन्यासों में नारी – डॉ. रेवा कुलकर्णी – चन्द्रलोक प्रकाशन, कानपुर, संस्करण, २०००

८१. हिन्दी गद्य स्वरूप और विकास – डॉ. हरदीप सिंह – दीपांकर प्रकाशन, ३४, पोस्ट ऑफिस स्ट्रीट, दोराहा मंडी, जिला लुधियाना, प्रथम संस्करण, १९९४

८२. हिन्दी लघु उपन्यासों के सन्दर्भ में निर्मल वर्मा के उपन्यास – डॉ. छाया मोहरीर – भारतीय ग्रन्थ निकेतन, २७१३, कूचा चेलान, दरियागंज, नई दिल्ली–११०००२, संस्करण, १९९७

८३. हिन्दी साहित्य का इतिहास – डॉ. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय – इलाहाबाद (उद्धृत)

(३) कोश :

१. अंग्रेजी – हिन्दी कोश – फादर कामिल बुल्के – एस. चन्द एण्ड कम्पनी, नई दिल्ली, संस्करण, १९८६

२. अमरकोश : आख्यायिकोपलब्धार्यो (उद्धृत)

३. ब्रिटेनिका विश्वकोश, पृ. ५८० (उद्धृत)

४. बृहद हिन्दी पर्यायवाची शब्दकोश – गोविंद चातक (उद्धृत)

५. हिन्दी साहित्यकार संदर्भ कोश – डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल, डॉ. मीना अग्रवाल, हिंदी साहित्य निकेतन, १६, साहित्य विहार, बिजनौर (उ. प्र.), प्रथम संस्करण, १९९७

६. हिन्दी–कन्नड़–अंग्रेजी : त्रिभाषा कोश (जिल्द–१) – केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, दिल्ली

७. हिन्दी साहित्य कोश (भाग–१) – डॉ. धीरेन्द्र वर्मा – ज्ञान मंडल प्रकाशन, वाराणसी

(४) पत्र–पत्रिकाएँ :

१. 'मधुमती' (मार्च–१९८५) – नन्द चतुर्वेदी – राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर

२. 'समीक्षालोक' (फरवरी–१९७२) (उद्धृत)

३. 'ज्ञानोदय' – सं. नेमिचंद जैन (फरवरी–१९६८) (उद्धृत)

४. 'ज्ञानोदय' (फरवरी–१९६८) – हरिशंकर उघ्रा

५. भारतीय परंपरा और आधुनिकरण (उद्धृत)

स्थल : भीलाड़, (दिव्येशकुमार एम. पटेल)
दिनांक : –०३–२०१४ **अध्येता**

(डॉ. आर. एम. पाण्डेय)
मार्गदर्शक